संपादकीय

कोविड-19 महामारी ने विश्वभर में जन-जीवन को बुरी तरह प्रभावित किया है। जन-जीवन के अलग-अलग दायरे तो अब इस महामारी से उबरते हुए दिख रहे हैं लेकिन स्कूली शिक्षा अभी भी अनिश्चितता से जूझ रही है। जहां एक ओर विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों और शिक्षा अधिकारियों में विद्यार्थियों के सीखने की 'हानि' को लेकर गंभीर चिंता है, वहीं स्कूलों को दुबारा खोलने से संक्रमण के फैलने का डर भी है। इन हालातों में शिक्षा तकनिकी का व्यवसाय करने वाली कम्पनियों को अपनी पैठ बनाने का एक अवसर मिला और 'ऑनलाइन शिक्षण व विद्यालयी शिक्षा का डिजिटल मोड' भी एक विकल्प के रूप में जरूर उभरा लेकिन अभी इसकी प्रभाविकता की शैक्षिक-समीक्षा व्यापक स्तर पर होना बाकी है। इस अंक में राम सिंह हापावत अपने लेख 'कोरोना के बहाने' में एक शिक्षा-कार्यकर्ता के दृष्टिकोण से इसकी प्रभाविकता की समीक्षा की कोशिश करते हैं। उनका यह लेख विभिन्न स्रोतों से जुटाए गए आंकड़ों और तथ्यों के विश्लेषण के जरिये एक नैरेटिव गढ़ने की कोशिश करता है। इन तथ्यों और आंकड़ों को जोड़कर देखने से पता चलता है कि कैसे डिजिटल माध्यमों की एक असमान उपलब्धतता वास्तव में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में शामिल होने के अवसरों और सामग्री तक पहुंच की एक असमान व्यवस्था का निर्माण कर रही है। जहां कहीं इनकी उपलब्धतता और पहुंच को सुनिश्चित भी किया जा रहा है वहां इनमें निहित शिक्षण-शास्त्रीय खामियों की समालोचना यह लेख प्रस्तुत करता है।

इस अंक के अन्य तीन लेख पिछली चली आ रही लेख-शृंखलाओं का ही हिस्सा हैं। कृष्ण कुमार द्वारा लिखित 'सार्वजनीन स्कूलीकरण और समानता' और राजेश कुमार द्वारा 'सोचना, याद करना, समझना और सीखना' अपनी-अपनी शृंखलाओं के अंतिम लेख हैं। रवि कांत द्वारा लिखित लेख भी पहले से जारी शृंखला 'गणित शिक्षण' का हिस्सा है हालांकि यह शृंखला आगामी अंकों तक अभी और जारी रहेगी। इस अंक में इसका चौथा भाग 'गिनना' पर केन्द्रित है। वहीं दूसरी ओर एक नयी लेख-शृंखला इस अंक से शुरू होने जा रही है। यह शृंखला दरअसल श्याम नारायण मिश्र की आत्मकथा 'अध्यापकीय जीवन का गुणनफल' के कुछ अंशों को प्रस्तुत करती है। श्याम नारायण मिश्र एक सरकारी अध्यापक और प्रधानाचार्य रहे हैं। 60 से 90 के दशकों में बिहार के विभिन्न स्कूलों में रहते हुए अनेकों ऐतिहासिक घटनाओं के न केवल वे प्रत्यक्षदर्शी रहे बल्कि इनमें व्यक्तिगत स्तर पर भागीदार भी बने। उनकी आत्मकथा के प्रस्तुत अंश के जरिये हम भारतीय स्कूलों के सरकारीकरण की जद्दोजहद और शिक्षक-संघों के आन्दोलनों की इसमें भूमिका से अवगत होंगे। हमें यह भी देखने का मौका मिलेगा कि कैसे आजादी के बाद एक शिक्षक की हैसियत और सीखने-सिखाने के माहौल में कुछ बुनियादी बदलाव आए। श्याम नारायण मिश्र की आत्मकथा का प्रकाशन अपने-आप में एक अहम् घटना है। सरकारी शिक्षक, शिक्षा-व्यवस्था का एक केन्द्रीय हितधारक होने के बावजूद आम तौर पर शैक्षिक विमर्शों और इनके तहत चलने वाली ज्ञान-सृजन की प्रक्रियाओं में हमेशा हाशिये पर ही रहे हैं। ऐसे में यह आत्मकथा खास हो जाती है, अंधेरे में एक प्रकाश कण-सी, जो आजादी के बाद स्कूली जीवन और एक शिक्षक के जीवन में घट रही अनेकों ऐतिहासिक परिघटनाओं पर रौशनी डालती है।

दो पुस्तक समीक्षाएं इस अंक में शामिल की जा रही हैं। पहली पुस्तक समीक्षा तो दरअसल गांधी जयंती के 150वें वर्ष के संदर्भ को ध्यान में रखकर लिखी गई है। ऋषभ कुमार मिश्र का लेख 'आजाद भारत में नयी तालीम का प्रयोग' चितरंजन दास द्वारा लिखित किताब 'लेटर्स फ्रॉम अ फॉरेस्ट स्कूल' की समीक्षा है। यह गांधी के 'शैक्षिक चिंतन और दर्शन' की ओर हमारा ध्यान खींचती है और उन प्रस्थान-बिन्दुओं को प्रस्तुत करने की कोशिश करती है जो उस वक्त के शैक्षिक चिंतन और दर्शन से इसे अलग करते हैं, साथ ही आज इनकी प्रासंगिकता को भी उकेरती है। दूसरी पुस्तक समीक्षा पल्लव द्वारा लिखी गयी है- 'आशा के स्रोतों की तलाश'। अपनी इस समीक्षा में पल्लव बाल साहित्य प्रकाशन में हाल के कुछ नए प्रयोगों की पड़ताल कर रहे हैं। एकलव्य और इकतारा जैसे संस्थानों के हाल में हुए कुछ नए प्रकाशनों में क्या आश्वस्त करता है और क्या नहीं इस समीक्षा के केन्द्रीय सवाल हैं।

इस अंक के साथ हम एक बार फिर शिक्षा-विमर्श के प्रकाशन को सुचारु रूप से शुरू कर रहे हैं। कोविड-19 महामारी एवं अन्य समस्याओं के चलते इसके प्रकाशन में आये व्यवधान का हमें खेद है। इस बीच हमें आपका सहयोग मिला और आपने धैर्य के साथ इसके दोबारा प्रकाशित होने का इंतजार किया, इसके लिए हम आपके आभारी हैं।

सभी के स्वास्थ्य और सुरक्षा की कामना के साथ! ◆

आप मंगवा सकते हैं
शिक्षा विमर्श के कुछ विशेषांक

बाल-साहित्य विशेषांक

मूल्य : 100 रुपये
कुल पृष्ठ : 196 (कवर सहित)

इतिहास शिक्षण विशेषांक

मूल्य : 50 रुपये
कुल पृष्ठ : 76 (कवर सहित)

शिक्षा का समाजशास्त्र-I विशेषांक

मूल्य : 60 रुपये
कुल पृष्ठ : 64 (कवर सहित)

अध्यापक विशेषांक

मूल्य : 150 रुपये
कुल पृष्ठ : 144 (कवर सहित)

राजनीति का शिक्षणशास्त्र विशेषांक

मूल्य : 175 रुपये
कुल पृष्ठ : 210 (कवर सहित)

शैक्षिक मूल्यांकन विशेषांक

मूल्य : 200 रुपये
कुल पृष्ठ : 148 (कवर सहित)

उपरोक्त विशेषांकों के अलावा आप शिक्षा विमर्श के अब तक प्रकाशित अंकों का पूरा सैट भी मंगवा सकते हैं।
नोट : डाक द्वारा मंगवाने पर पोस्टेज खर्च के लिए 20 प्रतिशत राशि अतिरिक्त जोड़ें।

खरीदने के लिए संपर्क करें : शिक्षा विमर्श, दिगन्तर, खोनागोरियान रोड, जगतपुरा, जयपुर-302017 राजस्थान
ईमेल : shikshavimarsh@digantar.org | khyaliram.digantar.org